INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 11 | DECEMBER – 2025

'धूमिल' की कविता में पूंजीवादी सभ्यता एवं वर्ग विभाजित समाज का अध्ययन

राजकुमारी पाण्डेय
शोधार्थी हिन्दी
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

डॉ लता द्विवेदी
सेवानिवृत्त प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष हिन्दी
शासकीय विज्ञान महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सारांश –

धूमिल की कविता भारतीय समाज में बढ़ती पूँजीवादी मानसिकता, आर्थिक असमानता और वर्ग–विभाजन का तीखा और यथार्थपरक विश्लेषण प्रस्तुत करती है। उन्होंने पूंजीवाद को ऐसी अमानवीय व्यवस्था के रूप में चित्रित किया है, जहाँ मनुष्य का मूल्य उसकी उपयोगिता से आँका जाता है और श्रम शोषण का मुख्य साधन बन जाता है। उनकी कविताओं में समाज दो वर्गों – शोषक और शोषित में स्पष्ट रूप से विभाजित दिखाई देता है। 'मोचीराम', 'संसद से सड़क तक', 'अकाल दर्शन' जैसी कविताओं में वे सत्ता, राजनेताओं, कानून, प्रशासन और बाजार सभी को पूंजी के हाथ का खिलौना बताते हैं। लोकतंत्र की दिखावटी चमक के पीछे छिपा वर्गीय शोषण उनका मुख्य लक्ष्य है। आम मजदूर, किसान, दिहाड़ी मजदूर और वंचित लोग उनकी कविता के केंद्र में हैं, जिनकी आवाज वे साधारण और कठोर भाषा में व्यक्त करते हैं। धूमिल का काव्य पूंजीवादी सभ्यता की चमक–दमक के पीछे छिपी अमानवीयता, झूठ और अन्याय को बेनकाब करता है। उनकी कविता संघर्ष, प्रतिरोध और सामाजिक चेतना की आवाज है जो मनुष्य को उसकी वास्तविक स्थिति दिखाते हुए न्याय और समानता की ओर प्रेरित करती है। धूमिल की कविता वर्ग–संघर्ष, शोषण–विरोध और सामाजिक यथार्थ का एक सशक्त दस्तावेज है।

मुख्य शब्द – धूमिल की कविता, भारतीय समाज, पूँजीवादी मानसिकता, आर्थिक असमानता और वर्ग–विभाजन।

प्रस्तावना –

नई कविता के दौर में धूमिल (सुधीर सक्सेना) उन कवियों में हैं जिन्होंने भारतीय समाज में बढ़ती आर्थिक असमानता, पूंजीवादी शोषण, राजनीतिक भ्रष्टाचार, वर्ग–विरोध और सामाजिक विडंबनाओं को सबसे तीव्र और स्पष्ट रूप से व्यक्त किया। धूमिल की भाषा कठोर, कटु, सीधी और सड़क की आवाज से निकली हुई है। उनके लिए कविता "समाज के सच को उजागर करने का औजार" है। उनकी काव्य–दृष्टि पूंजीवादी सभ्यता द्वारा उत्पन्न शोषण, असमानता और मानवीय संबंधों के व्यावसायीकरण पर गहरा प्रहार करती है। सुदामा पाण्डेय 'धूमिल' की कविता आधुनिक हिन्दी साहित्य में पूंजीवादी सभ्यता और वर्ग विभाजित समाज की आलोचना का अत्यंत महत्वपूर्ण माध्यम प्रस्तुत करती है। उनके काव्य में सामाजिक यथार्थ की गहन समझ और तीक्ष्ण दृष्टि स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। धूमिल ने अपने कवि–मन और संवेदनशील दृष्टिकोण के माध्यम

से समाज में व्याप्त वर्गीय असमानता, आर्थिक शोषण और पूंजीवादी संरचना की विषमताओं को उद्घाटित किया। उनके लिए कविता केवल सौंदर्य या भावनात्मक अभिव्यक्ति का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना और यथार्थवादी आलोचना का सशक्त मंच है।

धूमिल की कविताओं में पूंजीवादी सभ्यता का चित्रण केवल आर्थिक संरचना तक सीमित नहीं है, बल्कि वह मानव संबंधों, नैतिक मूल्यों और सामाजिक जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित करती है। इस व्यवस्था में व्यक्ति और समाज के बीच गहन द्वन्द्व, वर्गीय भेदभाव, शोषण और सत्ता का अनुचित प्रयोग उनकी कविताओं का केंद्र बिंदु बनता है। कवि ने इस विषमता और अन्याय को न केवल उद्घाटित किया, बल्कि उसके परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाले मानसिक, सामाजिक और नैतिक संकटों को भी गहराई से चित्रित किया।

वर्ग विभाजित समाज की उनकी दृष्टि में आमजन की पीड़ा, उपेक्षा और आर्थिक एवं सामाजिक असमानताओं की वास्तविकता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उनके काव्य में मजदूर, गरीब और उपेक्षित वर्ग की दशा केवल सांकेतिक या कल्पनाश्रित नहीं, बल्कि यथार्थवादी और संवेदनशील दृष्टि से प्रस्तुत होती है। यही दृष्टि धूमिल के काव्य को समाज के प्रति सजग और सक्रिय बनाती है।

विश्लेषण –

धूमिल की कविता में पूंजीवादी सभ्यता एवं वर्ग विभाजित समाज केवल विषयवस्तु नहीं, बल्कि उनके काव्य का गहन चिंतन और नैतिक प्रतिबद्धता का केंद्रीय आधार है। उनके दृष्टिकोण ने हिन्दी आधुनिक कविता को सामाजिक चेतना, यथार्थवाद और आलोचनात्मक दृष्टि का सक्रिय मंच प्रदान किया, जिससे उनकी रचनाएँ अध्ययन और विवेचन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बन गई हैं।

धूमिल जी ने पूँजीवादी सभ्यता और वर्ग विभाजित समाज की बढ़ती हुई दरार और असमानता को रोकना चाहते थे, उनकी मान्यता थी कि हर वर्ग में और अधिक साधन जुटाने की ललक में समाज को बांट दिया है। सरकार की दलगत नीतियों और बिकाऊ परिवेश में वर्ग संघर्ष की स्थिति उत्पन्न कर दी है। स्थाई समाधान की दिशा में उनकी छटपटाहट सहज ही दृष्टिगोचर होती है। पूँजीवादी सभ्यता और वर्ग विभाजित समाज को लक्ष्य कर धूमिल ने अपनी समग्र रचनाओं का सृजन किया है। 'अकालदर्शन' शीर्षक कविता में पूँजीवादी सभ्यता से ग्रस्त भूखी मानवता का चित्रण इस प्रकार चित्रित किया है

''भूख कौन उपजाता है
वह इरादा जो तरह देता है
या वह घृणा जो आंखों पर पट्टी बाँध कर
हमे घास की सट्टी में छोड़ आती है।''[1]

'अकाल दर्शन' कविता के अंतर्गत कवि ने वर्ग विभाजित समाज के संदर्भ में निम्नलिखित उदाहरण प्रस्तुत किए हैं –

''वे इस कदर पस्त है
कि तटस्त है
और मैं सोचने लगता हूँ कि इस देश में
एकता युद्ध की और दया
अकाल की पूँजी है।
क्रांति –
यहाँ के असंग लोगो के लिए
किसी अबोध बच्चे के –
हाथों की जूजी है।''[2]

'राजकमल चौधरी के लिए' शीर्षक 'कविता' में कवि इस पूँजीवादी वर्ग विभजित समाज में विसंगतियों को लेकर लड़ते हैं यथा –

''मैं उन तमाम चुनौतियों के लिए
खुद को तैयार करना चाहता हूँ
जिनका सामना करने के लिए छत्तीस साल तक
वह आदमी अंधी गलियों में
नफरत का दरवाजा खटखटाकर
कैचियों की दलाली करता रहा
छत्तीस साल तक गुप्त रोगों के इलाज की जड़ी
ढूंढता रहा वेश्याओं और गंजेड़ियों के
नीद भरे जंगल में।''[3]

मोचीराम कविता' में मोचीराम का संवाद कितना प्रासंगिक लगता है, जैसे –

''राँपी से उठी हुई आँखों ने मुझे
क्षण भर टटोला
और फिर
जैसे पतियाये हुए स्वर में
वह हँसते हुए बोला –
बाबू जी! सच कहूँ – मेरी निगाह में
न कोई छोटा है
न कोई बड़ा है
मेरे लिए हर आदमी एक जोड़ी जूता है।''[4]

'कवि 1970 की घटना' का जिक्र करते हुए कवि का विषय बोध कितना प्रासंगिक लगता है –

''बच्चा क्यों रो रहा है?
मैं चुप चाप उठ कर रसोई घर मे जाता हूँ
और पूँछता हूँ ''क्या हो रहा है''
यह जानते हुए भी कि कई दिनों के बाद
भूँख का जायका बदलने के लिए
आज कुम्हड़े की सब्जी पक रही है।
पत्नी का उदास और पीला चेहरा
मुझे आदत–सा–आंकता है।''[5]

इतना ही नहीं कवि स्वयं वर्ग विभाजित समाज का शिकार है, वे अपनी कविता में एक दीन हीन मलीन जीर्ण–शीर्ण कपड़ों में लिपटी बेसहारा का चित्रण करते हुए लिखते है –

''उसकी फटी हुई साड़ी से झाँकती हुई पीठ पर
खिड़की से बाहर खड़े पेड़ की
वह शत चमक रही है
मै झेंपता हूँ
और धूमिल होने से बचने लगता हूँ

याने बाहर का दुर–दुर
और भीतर का बिल–बिल होने से
बचने लगता हूँ
आप मुस्कराते हो।''[6]

'कल सुनना मुझे' काव्य संग्रह के अंतर्गत वर्ग विभाजित समाज का जीता जागता चित्र प्रस्तुत करते हुए धूमिल प्रजातंत्र के विरूद्ध शीर्षक कविता में दीन की पीड़ा का कवि ने इस प्रकार उल्लेख किया है –

''और उस आतताई की तलाश करो, हाय–हाय
इस बच्चे के पिता इस औरत के पति की तलाश करो
यहीं कहीं
हाँ–हाँ यहीं कहीं होगा
बद्दू मुहावरे की आड़ में
खुदकुशी की रस्सी लटकाता हुआ
पेट से लड़ते–लड़ते जिसका हाथ अपने प्रजातंत्र पर
उठ गया है।''[7]

'मुक्ति के तुरंत बाद' कविता के अंतर्गत देश की दशा का चित्रण करते हुए धूमिल ने कहा है –

''मगर मैने सहसा महसूस किया कि
लहू का एक कतरा
गेहूँ के दाने में गुन गुना उठा है
और इतिहास के मोड़ पर
एक जिंदा परछाई गहरा गई है।''[8]

'रोटी और संसद' पूँजीवादी सभ्यता का एक अप्रतिम उदाहरण है –

''एक आदमी
रोटी बेलता है
एक आदमी रोटी खाता है।
एक तीसरा आदमी भी है
जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है।
वह सिर्फ रोटी से खेलता है।
मैं पूँछता हूँ –
यह तीसरा आदमी कौन है?
मेरे देश की संसद मौन है।''[9]

'सुदामा पाँड़े का प्रजातंत्र कमरा' शीर्षक कविता सामाजिक वर्ग वैषम्य का चित्र प्रस्तुत करती है। प्रस्तुत कविता में दीनता की झांकी इस प्रकार प्रदर्शित की गई है –

''पिता एक्का हाँकता है
माँ कोठी में बरतन माँजती है
बेटी जवान है–उसके जिम्में
संतरों की बिक्री का काम है

बेटा पढ़ता है तीसरी जमात में
यह सब दिन काटने का सरंजाम है।''[10]

'मैने घुटनों से कहा' शीर्षक कविता में पूँजीवादी सभ्यता का जर्जर स्वरूप अंतर्मन को आंकता और दीन अवस्था को झांकता है। उन्ही के शब्दों में –

''कविता मे कितना जहर है और कितना देश
अपनी गरीबी की मार का मुँह मोड़ने के लिए
एक शब्द कितना कारगर होता है
तुम्हे यह सवाल तय करना था।
अपनी भूख और बेकारी और नींद को
साहस की चौकी पर रख दो
और देखो की दीवार पर उसका
क्या असर होता है।''[11]

धूमिल का सामाजिक बोध एक ऐसा पड़ाव है जहाँ पूँजीवादी सभ्यता और वर्ग विभाजित समाज का तांडव नग्न रूप से प्रदर्शित हुआ है, जिसके समाधान के लिए कविता अंर्तमन कराह उठता है।

निष्कर्षः

निष्कर्षतः सुदामा पाण्डेय 'धूमिल' की कविता में पूंजीवादी सभ्यता और वर्ग विभाजित समाज का चित्रण केवल विषयगत अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि यह उनके काव्य–संसार का केंद्रीय तत्व और सामाजिक प्रतिबद्धता का सशक्त प्रमाण है। उनके दृष्टिकोण में पूंजीवाद और वर्ग विभाजन के कारण उत्पन्न असमानताएँ, शोषण और मनोवैज्ञानिक दबाव स्पष्ट रूप से उजागर होते हैं। धूमिल ने अपने काव्य में आमजन की पीड़ा, सामाजिक अन्याय और नैतिक विसंगतियों को संवेदनशील और यथार्थवादी दृष्टि से प्रस्तुत किया। उनकी कविता में पूंजीवादी संरचना के प्रभाव को केवल आर्थिक पक्ष तक सीमित नहीं किया गया, बल्कि यह मानवीय संबंधों, नैतिक मूल्यों और सामाजिक जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित करने वाला तत्व के रूप में परिलक्षित होता है। इसी प्रकार, वर्ग विभाजन की उनकी दृष्टि आमजन की कठिनाईयों, शोषित वर्ग की पीड़ा और सामाजिक असमानताओं की जटिलताओं को स्पष्ट करती है। इस दृष्टि से धूमिल का काव्य समाज के यथार्थ और उसके नैतिक प्रश्नों के बीच गहन संवाद स्थापित करता है। इस प्रकार धूमिल की कविता में पूंजीवादी सभ्यता एवं वर्ग विभाजित समाज उनकी सामाजिक चेतना, यथार्थवादी दृष्टि और नैतिक प्रतिबद्धता का सशक्त द्योतक है। उनकी कविताएँ न केवल साहित्यिक सौंदर्य और कलात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम हैं, बल्कि सामाजिक विमर्श, आलोचनात्मक चिंतन और यथार्थवादी दृष्टि का सक्रिय मंच भी हैं। इस दृष्टि से धूमिल का योगदान हिन्दी आधुनिक कविता में स्थायी और अध्ययन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

संदर्भ –

[1] धूमिल – संसद से सड़क तक–अकाल दर्शन, पृष्ठ 15
[2] धूमिल – संसद से सड़क तक–अकाल दर्शन, पृष्ठ 18
[3] धूमिल – संसद से सड़क तक–राजकमल चौधरी के लिए, पृष्ठ 34
[4] धूमिल – संसद से सड़क तक–मोचीराम, पृष्ठ 37
[5] धूमिल – संसद से सड़क तक–कवि 1970, पृष्ठ 64
[6] धूमिल – संसद से सड़क तक–कवि 1970, पृष्ठ 64
[7] धूमिल – कल सुनना मुझे–प्रजातंत्र के विरूद्ध, पृष्ठ 54

[8] धूमिल – कल सुनना मुझे–मुक्ति के तुरंत बाद, पृष्ठ 61
[9] धूमिल – कल सुनना मुझे–रोटी और संसद, पृष्ठ 66
[10] धूमिल – सुदामा पाँड़े का प्रजातंत्र–कमरा, पृष्ठ 103
[11] धूमिल – सुदामा पाँड़े का प्रजातंत्र–मैने घुटने से कहा, पृष्ठ 55